BA Part II (Soc/GE)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Sociology

Lecture II

भारत में निर्धनता के प्रमुख कारण => Gunnar Myrdal (Asian Drama) - ने भारत में निर्धनता के लिए अग्रलिखित कारणों का उल्लेख किया है -

1) उच्च जीवन स्तर व्यतीत करने की आकांक्षा का नहीं होना।
2) आलस्य एवं निष्क्रियता
3) भाग्यवादी मनोवृत्ति
4) चिंतन-मनन को जीवन का उच्च लक्ष्य समझना
5) कर्म के सिद्धान्त में अत्यधिक विश्वास
6) आराम तलबी तथा हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना
7) शारीरिक परिश्रम करने में अपने को अपमानित मानना।
8) अंध विश्वासों तथा कुरीतियों का होना
9) सामाजिक आर्थिक शोषण को चुपचाप सहन करते रहना।

II) आर्थिक कारण => निर्धनता के कारणों में आर्थिक कारणों की भूमिका को सही रूप से समझने के लिए हमें उन व्यक्तियों को, जो श्रम के कार्य में लगे हुए हैं और जो नहीं लगे हैं में अंतर करना होगा। व्यक्ति का श्रम के कार्य में लगे रहने का अर्थ है कि व्यक्ति कोई कार्य में लगा हो या कार्य के प्रति समर्पित हो तो वह निर्धन नहीं होगा परन्तु जो व्यक्ति कार्य में न लगा हो और आय का कोई साधन न हो तो अवश्य निर्धन होगा। आर्थिक कारणों में कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार है —

a) मानवीय धन का अभाव तथा श्रमिकों में निपुणता व क्षमता की कमी - मानवीय धन से अभिप्राय उस निपुणता व क्षमता से है जो व्यक्ति को श्रम के क्षेत्र में प्रवेश दिलाते हैं। एक श्रमिक को जितना मानवीय धन कम होगा तथा उसमें जितनी निपुणता व योग्यता निम्न होगी, उतनी ही उसके कार्य में संभाव्य उत्पादकता कम होगी, अतः कम मानवीय धन वाले व्यक्तियों को काम देने वाले मालिक अपने यहां काम देने में कम उत्सुक होंगे और यदि उन्हें देंगे भी तो उन्हें मजदूरी अधिक देंगे। इस प्रकार बेरोजगारी और निम्न मजदूरी बहुत से श्रमिकों में निर्धनता पैदा करेंगे।

b) श्रम की अपर्याप्त मांग एवं बेरोजगारी ⇒ श्रम की अपर्याप्त मांग भी निर्धनता की समस्या उत्पन्न करती है।

c) भेदभाव ⇒ श्रम मार्केट व स्कूलों आदि में भेदभाव भी निर्धनता उत्पन्न करता है। गरीब, अल्पसंख्यक समुदायों व निर्धनों के बच्चों को मानवीय धन संबंधी लक्षण प्राप्त करने तथा इन लक्षणों को श्रम मार्केट में प्रयोग करने के समान अवसर नहीं दिए जाते। इस आधार पर धर्म, लिंग, जाति आदि पर किए जाने वाले भेदभाव का निर्धनता के विस्तार व विस्तार पर विशेष प्रभाव मिलता है।